

समयवद्ध कार्यक्रम

अनुसंधान पत्रक 3/2013-14

क.सं.	कार्य	वर्ष	माह
वर्धी प्रवर्धन			
1	स्वस्थ पौधों का चयन	—	कभी भी
2	स्वस्थ पौधों से कटिंग प्राप्त करना/लगाना	प्रथम वर्ष	जुलाई प्रथम पक्ष
3	रूटेड कटिंग का रूट ट्रेनर/थैली में प्रत्यारोपण	द्वितीय वर्ष	मार्च
4	पौधों का रखरखाव	द्वितीय व तृतीय वर्ष	—
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई
बीज से पौध तैयार करना			
1	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	जुलाई द्वितीय पक्ष / अगस्त प्रथम पक्ष
2	मिस्ट चैम्बर में बीज बुआई	प्रथम वर्ष	सितम्बर मध्य
3	अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण	प्रथम वर्ष	नवम्बर- दिसम्बर
4	पौधों का रखरखाव	द्वितीय व तृतीय वर्ष	—
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई

धिंधारू (*Pyracantha crenulata*)

पौध उत्पादन प्राविधि



विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

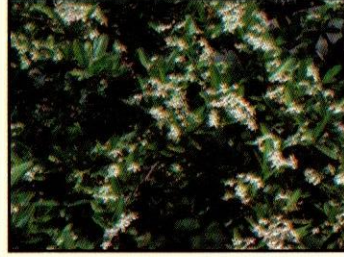
- 1- मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0- 9412076135, 05946-234047
- 2- वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596-235136
- 3- वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942-236270

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल।
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

धिंघारू (*Pyracantha crenulata*)

परिचय

धिंघारू रोजेसी कुल की सदाबहार झाड़ी है जिसकी ऊँचाई लगभग 4.5 मीटर तथा गोलाई 20-25 सेमी० तक होती है। इसका विस्तार पूर्वी एशिया में हिमालय से चीन तक है तथा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में यह सामान्यतः 600 मी० से 2150 मी० ऊँचाई तक खुले स्थानों एवं बंजर भूमि पर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त चीड़ व बॉज वनों के साथ तथा नदियों के किनारे भी प्रायः पाया जाता है। पुष्प उभयलिंगी होते हैं एवं सफेद पुष्प अप्रैल से मई के मध्य खिलते हैं तथा फल जुलाई-अगस्त में परिपक्व होते हैं। सुर्ख लाल रंग के परिपक्व फल अत्यन्त मनोहारी दिखाई देते हैं एवं वर्षाकाल में वन्य जीवों को प्रचुर आहार प्रदान करते हैं। इसका फल स्वादिष्ट व शर्करा युक्त होता है तथा स्थानीय ग्रामीणों द्वारा भी खाया जाता है। औषधीय गुणों के कारण इसका प्रयोग विभिन्न औषधियों के निर्माण में भी किया जाता है। इसकी शाखाओं का उपयोग मुख्य रूप से छड़ी बनाने व जलौनी लकड़ी के रूप में किया जाता है। भूमि संरक्षण की दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रजाति है।



प्रवर्धन प्राविधि

धिंघारू का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)

- स्वस्थ पौधों का चयन करें एवं जुलाई प्रथम सप्ताह में 2 वर्ष की शाखाओं की लीडिंग शूट की लगभग 10 सेमी० लम्बी कटिंग तैयार करें।
- कटिंग को आई०बी०ए० 5000 पी०पी०एम० से उपचारित कर मिस्ट चैम्बर में बालू में रोपित करें।
- कटिंग में जड़ प्रस्फुटन लगभग 3 माह उपरांत प्रारम्भ हो जाता है जो 5-6 माह तक चलता रहता है तथा लगभग 75% पौधों में रूटिंग प्राप्त होती है।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह मार्च में 300सी०सी० के रूट-ट्रेनर अथवा 9"x 6" के पॉलीबैग में करना चाहिए। पॉटिंग मीडियम मिट्टी व वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया है।



- प्रत्यारोपण के लगभग 15 माह पश्चात अगले वर्षाकाल में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज को प्राप्त करने लिए सर्वप्रथम स्वस्थ व रोग मुक्त पौधों का चयन किया जाता है तथा इन्हीं पौधों से फल/बीज एकत्र करना चाहिए। इसका फल जुलाई द्वितीय पक्ष/अगस्त प्रथम पक्ष में एकत्र करना चाहिए तथा ताजे फलों को हाथ से मसलने पर बीज आसानी से अलग किया जा सकता है। तत्पश्चात् बीज को धूप में सूखा लेते हैं। माह सितम्बर मध्य में बुआई से पूर्व बीज को सामान्य पानी से 12 घण्टे



भिगाते/उपचारित करते हैं। उपचारित बीज को मिस्ट-चैम्बर में जर्मिनेशन ट्रे में बालू+मिट्टी (1:1) में बुआई करते हैं। बीज बुआई लाईन में करनी चाहिए तथा मिस्ट-चैम्बर का तापमान 30° से 35° सेन्टीग्रेट तथा आर्द्रता 70-80 प्रतिशत सुनिश्चित करने पर 12 से 15 दिनों में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है तथा लगभग 60 प्रतिशत अंकुरण 40 दिनों में प्राप्त होता है।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण 3-4 पत्तियाँ आने पर माह नवम्बर-दिसम्बर में शेड-नेट में करना चाहिए। प्रत्यारोपण हेतु पौधों को सावधानीपूर्वक जर्मिनेशन ट्रे या अंकुरण क्यारी से निकालना चाहिए तथा पौधों को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। 300 सी०सी० के रूट-ट्रेनर एवं 9"x 6" पॉलीबैग में प्रत्यारोपण करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। पॉटिंग मीडियम मिट्टी+वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया है। अगले वर्ष फरवरी-मार्च में पौधों को खुले स्थान में रखा जा सकता है तथा नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए।



रोपण

2 वर्ष की पौध रोपण हेतु उपयुक्त होती है। वर्षाकाल के प्रारम्भ में रोपण करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। रोपण 1 मी० x 1 मी० की दूरी पर खुले स्थानों में किया जाना चाहिए।